अंक योजना

सत्रीय परीक्षा - 2

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2021-22

विषय - हिंदी (ऐच्छिक)

विषय कोड - 002

कक्षा बारहवीं

निर्धारित समय: 2 घंटे पूर्णांक: 40

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर - बिंदु अंतिम नहीं हैं। यह सुझावात्मक एवं सांकेतिक है।
- यदि परीक्षार्थी इन संकेत बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ। मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

प्रश्न 1 किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। (5x1=5 अंक)

भूमिका — 1 अंक

विषय वस्तु — 3 अंक

भाषा — 1 अंक

प्रश्न 2 किसी एक विषय पर पत्र (शब्द सीमा लगभग 120 शब्द) (5x1=5 अंक)

आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ - 1 अंक

विषय वस्तु - 3 अंक

भाषा — 1 अंक

प्रश्न 3 (शब्द सीमा लगभग 50 शब्द)

(3x1 = 3) + (2x1=2)

(क) कल्पना करना मानव का स्वभाव और गुण है। कई बार घटना सच्ची होती है परंतु उसे सुनाते समय अपने आप कल्पना का मिश्रण हो जाता है। मनुष्य वही सुनना पसंद करता है जो प्रिय लगता है। मान लीजिए युद्ध क्षेत्र में हमारा नायक हार गया है परंतु हम यह सुनना ज़रूर पसंद करेंगे कि वह किस प्रकार वीरता से लड़ा। कितनी वीरता से लड़ते हुए उसने एक बड़े और अच्छे उद्देश्य के लिए अपने प्राणों की कुर्बानी दी। नायक की वीरता का बखान करने वाले कथावाचक की सभी प्रशंसा करते हैं और उसे कुछ इनाम भी देंगे। कथावाचक सुनने वालों की इच्छानुसार अपनी कल्पना के माध्यम से नायक के गुणों का वर्णन रोचकता के साथ

करता है। इस प्रकार कल्पना कहानी में परिवर्तित हो जाती है।

अथवा

नाटककार नाटक के माध्यम से जीवन के किसी पक्ष - विशेष को प्रस्तुत करता है। इसलिए नाटक में चित्रित - पात्र भी जीवन से जुड़े हुए तथा अपने आस - पास के परिवेश के ही होने चाहिए। नाटकों में इस प्रकार के चरित्र नहीं प्रस्तुत किए जाने चाहिए जो सपाट, सतही अथवा एक विशेष टाइप के हो, जैसे हम अपनी जिंदगी जीते हैं, हम और हमारे पास के लोग अच्छे और बुरे भी है, उनमें से कुछ अच्छे बुरे बन जाते हैं और बुरे अच्छे बन जाते हैं, उसी प्रकार से नाटक में चित्रित पात्र भी अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होने चाहिए। उनके चरित्र का विकास तथा बदलाव भी एक स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में होना चाहिए।

ख. जब कहानीकार कहानी के कथानक का स्वरूप बना लेता है तब वह कथानक को देशकाल और वातावरण के साथ जोड़ने का प्रयास करता है। देशकाल और वातावरण कहानी को प्रामाणिक और रोचक बनाने के लिए अति आवश्यक होता है। कथानक का देशकाल और वातावरण से सीधा संबंध होता है। अगर कथानक की घटनाएँ वातावरण से मेल नहीं खाती तो कहानी असफल साबित हो जाती है। यानि कि कहानीकार जिस परिवेश से कहानी के कथानक को जोड़ना चाहता है उस परिवेश के बारे में कहानीकार को संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए तभी वह कथानक का विस्तार कर सकता है।

अथवा

भारतीय काव्य - शास्त्र में नाटक को दृश्य - काव्य माना गया है। इस आधार पर नाटक साहित्य की ऐसी विधा है जो पाठ्य होने के साथ-साथ देखी भी जा सकती है। नाटक संवाद प्रधान प्रस्तुति होती है। सफल एवं श्रेष्ठ नाटक वही माना जाता है जो अभिनय के साथ - साथ पठनीय भी होता है। अभिनेयता का गुण ही नाटक को साहित्य की अन्य विधाओं से अलग करता है। नाटक की संपूर्णता रंगमंच पर सफल होजाने पर ही मिलती है।

प्रश्न4 (शब्द सीमा लगभग 50 शब्द)

$(3 \times 1 = 3) + (2 \times 1 = 2)$

(क) समाचार - पत्र अथवा जन संचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएं पहुंचाते हैं। पाठकों को जागरूक और शिक्षित बनाने और उनका मनोरंजन करने के लिए

लेखन के जिन विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जाता है उन्हें पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

पत्रकार मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं —

(i) पूर्णकालिक पत्रकार।

(ii) अंशकालिक पत्रकार।

(iii) फ्री लांसर अर्थात स्वतंत्र पत्रकार।

अथवा

समाचार लेखन पत्रकारीय लेखन का जाना - पहचाना रूप है। साधारणतया समाचार - पत्रों में समाचार पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकारों द्वारा लिखे जाते हैं जिन्हें संवाददाता अथवा रिपोर्टर भी कहते हैं। समाचार-पत्रों में प्रकाशित अधिकतर समाचारों के लिए एक विधि अपनाई जाती है। इन समाचारों में किसी भी समस्या, विचार तथा घटनाओं के महत्वपूर्ण तथ्य सूचना और उससे संबंधित सारी जानकारी को आरंभ में वाक्य खंडों में लिखा जाता है। उसके पश्चात वाक्य खंडों में से महत्वपूर्ण तथ्य और सूचना को प्रकाशित किया जाता है। इस प्रकार लिखे समाचार पाठकों तक पहुँचते हैं।

(ख) समाचार पत्रों में विशेष लेखन की महत्वपूर्ण भूमिका है। विशेष लेखन अर्थात किसी विशेष विषय पर सामान्य लेखन से हटकर लिखा गया लेख। अधिकांश अखबारों और पत्रिकाओं के अतिरिक्त दूरदर्शन और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समुदाय भी अलग होता है।

अथवा

वास्तव में खबरें कई प्रकार की होती हैं — राजनीतिक, आर्थिक, अपराध खेल, फिल्म, कृषि, कानून, विज्ञान और किसी भी अन्य विषय से संबंधित। संवाददाताओं के बीच काम का बंटवारा खासतौर पर उनकी रुचियों और ज्ञान को ध्यान में रखकर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे 'बीट' कहा जाता है। एक संवाददाता यदि अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करता है तो उसकी बीट अपराध मानी जा सकती है। समाचार-पत्र की तरफ

से वह इनकी रिपोर्टिंग के लिए उत्तरदायित्व तथा जवाबदेह भी होता है।

प्रश्न5 (शब्द सीमा लगभग 60 शब्द) (2×3 = 6)
किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर

(क) भाव-सौंदर्य- राम के वनगमन के बाद राम की वस्तुएँ देखकर कौशल्या के मन में वात्सल्य उमड़ पड़ा। राम की माता, उस धनुष-बाण को देखती है जिसे राम बचपन में धारण करते थे। वे राम की जूतियों को कभी आँखों से छूती हैं तो कभी छाती से लगाती हैं। वे कभी सवेरे-सवेरे प्रकट रूप में जाकर राम को जगाने का अभिनय करती है- "हे पुत्र! उठो। माँ, तुम्हारे रूप पर बलिहारी है। तुम्हारे छोटे भाई और सभी मित्र द्वार पर खड़े हैं"

- पुत्र-वियोग से दुखी माता कौशल्या की वेदना मुखरित हुई है।
- अपने पुत्र राम के बचपन की वस्तुएँ देख व्याकुल कौशल्या की मार्मिक दशा का चित्रण किया गया है।

शिल्प सौंदर्य

- ब्रजभाषा में वेदना की सरल, सहज, स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है।
- पद में चित्रात्मकता का गुण है।
- माधुर्य गुणयुक्त पद में वात्सल्य रस घनीभूत है।
- संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है।
- 'बार-बार' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की छटा दर्शनीय है। (3 अंक)

(ख) इन पंक्तियों में विद्यापति राधा की विरह दशा को व्यक्त किए हैं राधा की सखी राधा की विरह-दशा का वर्णन कृष्ण से कर रही है। वह कहती है कि हे कृष्ण! प्रफुल्लित वन को देखकर वह कमलमुखी राधा आँखों को मूँद लेती है। कोयल की मीठी कूक तथा भौंरो की मधुर झंकार सुनकर दोनों हाथों से कान बंद कर लेती है।

(ग) अगहन मास में अधिक सर्दी होती है इसलिए इस मास की शीतलता नागमती की विरह-वेदना को और अधिक बढ़ा देती है। इस मास में दिन छोटे तथा रातें लंबी होती हैं। इससे वियोग अधिक बढ़ जाता है। रातें लंबी होने के कारण नायिका अपने प्रियतम के वियोग में व्यथित हो जाती है।

प्र6 (शब्द सीमा लगभग 30-40 शब्द) (1×2 = 2)

5) पहले पद में भरत जब बोलने के लिए उठे तो वे पुलकित हो गए।

Page-

उनके नेत्र कमल के समान थे। उनके कमल नयनों में प्रेम के आँसुओं की बाढ़-सी आ गई। वे बोलने में स्वयं को असमर्थ महसूस कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मुझे जो कुछ कहना था, वह पहले ही मुनिनाथ ने कह दिया। अपने प्रति राम का असीम प्रेम यादकर उनकी भावुकता बढ़ गई थी।

(ख) इस पंक्ति में नायिका को जाड़े में विरह बाज़ के समान लगता है। विरह रूपी बाज नागमती को जीवित खा रहा है। यह बाज मरने के बाद भी उसे नहीं छोड़ेगा। नायिका का रक्त बह गया है मांस गल गया है तथा सारी हड्डियाँ शंख-सी हो गई है। वह सारस के जोड़े के समान अपने प्रिय का नाम रट-रटकर मर-सी गई है। वह प्रिय को कहती है कि हे प्रिय अब तो मेरी मरणासन्न दशा में आकर मेरे पंखों को समेट लो।

प्रश्न 7 (शब्द सीमा लगभग 50-60 शब्द) (3x2 = 6)

(क) 'जहाँ कोई वापसी नहीं'– यात्रा वृत्तांत 'धुंध में उठती धुन' संग्रह से लिया गया है। इसमें लेखक ने पर्यावरण-संबंधी सरोकारों का ही नहीं, विकास के नाम पर पर्यावरण-विनाश से उपजी विस्थापन संबंधी मनुष्य की यातना को भी रेखांकित किया है। औद्योगिक विकास के दौर में आज प्राकृतिक सौंदर्य किस तरह नष्ट होता जा रहा है इसका मार्मिक चित्रण इस पाठ में किया गया है। यह पाठ विस्थापितों की अनेक समस्याओं का हृदयस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करता है। इस सत्य को भी उद्घाटित करता है कि आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ़ मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश, संस्कृति और आवास-स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

(ख) मिल मालिक स्वयं मजदूरों को दो हाथ जोड़कर उन्हें चार हाथों वाला तो बना नहीं सकता था। इस काम के लिए उसने बड़े वैज्ञानिकों को भारी वेतन पर रखा। उन वैज्ञानिकों का काम था कि वे ऐसी तकनीक निकालें कि आदमी के चार हाथ हो जाएँ। कई सालों के प्रयोग तथा शोध के बाद वैज्ञानिकों ने कहा कि यह असंभव है कि आदमी के चार हाथ हो जाएँ। मिल मालिक ने उन्हें नौकरी से निकाल दिया। उसने स्वयं इस काम को पूरा करने का बीड़ा उठाया। उसने कटे हाथ मँगवाकर मजदूरों को फिट करवाए परंतु असफल रहा। मजदूरों को

लकड़ी व लोहे के हथ भी नहीं लग सके। उसके इतने प्रयोगों से मज़दूर ही मर गए।

(ग) हर की पैड़ी पर पुजारी के पास संभव और एक बिल्कुल ही अनजान युवती का युगल समझ पुजारी उन आशीर्वचनों को कह जाता है जो किसी नवविवाहित जोड़े को कहे जाते हैं। संभव इस लड़की से सचमुच प्रेम करने लगता है और अपना सुख-चैन खो बैठता है। वह उसे खोजने और मिलने के लिए अगले दिन भी घाट पर जाता है और खोजते हुए मनसा देवी पहुँच जाता है। वहाँ से लौटते हुए उसकी मुलाकात अचानक ही उसी लड़की पारो से हो जाती है। शरत्चंद्र लिखित उपन्यास का नायक देवदास भी पारो के प्रेम में भटकता-फिरता है। अंत में परिचय के समय संभव भी अपने नाम के साथ देवदास जोड़ देता है। इस प्रकार यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

प्रश्न 8 किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (1×2=2 अंक)

(क) लड़की भी संभव से प्रेम करने लगी थी। वह भी संभव से मिलना चाहती थी। उसने भी कुछ ऐसी ही मनोकामना की पूर्ति के लिए धागा बाँधा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि मनसा देवी में माँगी गई मुराद इतनी जल्दी पूरी हो जाएगी। वह संभव से मिलने के बाद प्रसन्न थी। वह हैरान भी थी कि उसकी इच्छा इतनी जल्दी पूरी हो जाएगी।

(ख) प्रकृति के क्रोध के कारण बाढ़, भूकंप आदि आते हैं। इस कारण से लोगों को अपना घर-बार छोड़ना पड़ता है। संकट के समाप्त होने पर वे सभी अपने पुराने स्थानों पर वापस आ जाते हैं, परंतु औद्योगीकरण के कारण लोगों का विस्थापन स्थायी होता है। विकास और प्रगति के नाम पर इन लोगों के परिवेश तथा आश्रयस्थल सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं। ऐसे में वे उस स्थान पर पुनः कभी भी बसने नहीं आ सकते हैं। (2 अंक)

प्रश्न 9 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2×2=4 अंक)

(क) बिस्कोहर में वर्षा एकदम नहीं आती थी। पहले बादल घिरते, फिर गड़गड़ाहट होती थी। पूरा आकाश बादलों से घिर जाता। ऐसा लगता था कि दिन में रात हो जाती थी। इस ऋतु में तबला, मृदंग और सितार का

संगीत सबसे ज्यादा होता है। वर्षा घर की छत से ऐसी आती जैसे घोड़ों की कतार दूर से दौड़ी चली आ रही है। वह बादल नदी, डगहर, बद्की बगिया और पड़ोस के घर में बरसा। आँधी चलती तो छप्पर उड़ जाते थे। कई दिन लगातार बरसता तो दीवार गिर जाती और घर धँस जाते थे। भीषण गर्मी से राहत मिलने पर प्रसन्नचित्त कुत्ते बकरी मुर्गी-मुर्गे भी बेमतलब इधर-उधर भागते और फिरते। इस पहली वर्षा में नहाने से फोड़े-फुंसी ठीक हो जाते थे। वनस्पतियाँ नया जीवन पाती थीं। जोंक, केंचुआ, जुगनू, बोका मच्छर आदि की संख्या बहुत बढ़ जाती थी। (2 अंक)

(ख) किसी समय मालवा में बहने वाली नदियाँ ही उस क्षेत्र को हरा-भरा रखती थीं, परंतु औद्योगीकरण के लगातार बढ़ने से उद्योग-धंधों में खूब वृद्धि हुई। नदियाँ जो सभ्यता की जननी होती थीं, उनके किनारे नगर बसाए गए, जिससे वहाँ जनसंख्या में वृद्धि हुई। इन नगरों का गंदा पानी और फैक्ट्रियों का रसायन मिश्रित पानी इन नदियों के अमृततुल्य पानी में मिलने के लिए छोड़ दिया गया। अवशिष्ट पदार्थों, प्लास्टिक की थैलियों के प्रयोग से इनका प्रवाह बाधित हुआ है। फलतः ये नदियाँ गंदे पानी का तालाब बनकर रह गई हैं। इस प्रकार हमारी वर्तमान सभ्यता ने इन्हें गंदे पानी के नालों में परिवर्तित कर दिया है। (2 अंक)

(ग) लेखक (बिसनाथ) जाड़े की धूप और चैत (मार्च) की चाँदनी में ज्यादा फर्क महसूस नहीं करते। बरसात की भीगी चाँदनी चमकती तो नहीं परंतु मधुर और शोभा के भार से अधिक दबी होती है। वे इस चाँदनी की शोभा में अपने गाँव दिस्कोहर की एक सुंदर औरत को देखते हैं। उन्होंने उसे पहली बार अपने रिश्तेदार के यहाँ देखा था। प्राकृतिक सौंदर्य में लेखक को यही सुंदर औरत दिखाई देती है। हैरानी की बात यह है कि यह औरत बिसनाथ (लेखक) से दस साल बड़ी है। बिसनाथ इस सुंदर औरत की सुंदरता पर मोहित है जब लेखक दिस्कोहर में संतोषी भइया के

यहाँ गए हुए थे तो उन्हें बरसात की चाँदनी रात में उसी सुंदर औरत का प्रतिबिंब दिखाई देता है। बिसनाथ को वह औरत ही नहीं लगी बल्कि औरत के रूप में चाँदनी जूही की लता बनकर फूलों की खुशबू सी लगी। अब प्रकृति नारी बन गई है ऐसा प्रतीत होता है। काफी वर्षों बाद एक बार बिसनाथ उस सुंदर औरत से मिले तो उन्होंने काफी हिम्मत जुटाकर उसे कहा था — "जो तुम्हें पा जाएगा वह जरूर ही पागल हो जाएगा"। इस प्रकार प्राकृतिक सौंदर्य में लेखक को नारी सौंदर्य का अनुभव होता है। (2 अंक)